□□□□ □□□□□ □□□□□□□□□

जनसत्ता 6 जनवरी, 2014 : दल्लिी केमुख्यमंत्री अरवदि केजरीवाल जब वशि्वास-मत ग्रहण कर रहे थे

तो सारे देश की नगिाहें उन पर थीं। तमाम टीवी चैनल अपने राष्ट्रीय नेटवर्कपर दल्लिी वधिानसभा की उस संक्षप्ति लेकनि जरूरी बहस को प्रसारति कर रहे थे और तमाम वशि्लेषकउस बहस के□ क□ कशब्द को ध्यान से सुन रहे थे। ऐसा देश की राजनीतमिें कम ही हुआ है जब कसिी वधिानसभा के वशि्वास-मत को पूरे देश ने इतनी शद्दित केसाथ दलि थाम कर देखा, जैसे उसकी बहसों और परणिामों पर देश की भावी राजनीतकी दशिा नरि्धारति होने वाली हो। नशि्चति तौर पर ऐसा 1993 में उस समय हुआ था जब उत्तर प्रदेश वधिानसभा में समाजवादी पार्टी और बहुजन समाज पार्टी की गठबंधन सरकार बनी थी। उसकी तरफपूरा देश इस उम्मीद से देख रहा था कक्या दलति और पछि□ा क्रांतकेतौर पर उभरा यह गठबंधन पहले उत्तर प्रदेश और फरि पूरे देश में हदिुत्व केफासीवादी अभयिान को रोकपा□ गा? भले वह गठबंधन अल्पजीवी रहा लेकनि फलिहाल उसने भारतीय जनता पार्टी की जमीन पक□ ती ज□ों को हलिा दयिा था।

कुछ वैसी ही उम्मीद और वमिर्श केसाथ आप की सरकार और उसे बाहर से मलिे कांग्रेस समर्थन को देखा जा रहा है। यही वजह है कयिह सरकार सबसे ज्यादा भारतीय जनता पार्टी की आंखों की करिकरिी बन गई है और तभी उसकेनेता हर्षवर्धन ने न सरि्फउसकी ईमानदारी केदावे को खोखला बताया बल्कि उसकी देशभक्तपिर भी संदेह करते हु। अपने प्रधानमंत्री पद केदावेदार नरेंद्र मोदी का प्रचार करने से नहीं चूके। उन्होंने वधिानसभा केवशि्वास-मत की बहस में नरेंद्र मोदी की प्रधानमंत्री पद की दावेदारी को इस तरह से पेश कयिा जैसे कि उन्हें इसी वधिानसभा से प्रधानमंत्री बनना है और यहीं बैठना है!

हालांकि समर्थन देते हु। कांग्रेस ने आप की बजिली और पानी की नीतयिों पर अफसरों से गुमराह होने और अव्यावहारकिहोने का आरोप लगाया और पांच साल तकसमर्थन देने की अतशियोक्तपिूर्णबात कहते हु। उसे परोक्ष रूप से यह धमकी भी दी कयिह समर्थन तभी तकरहेगा जब तकवे जनहति में कदम उठाते रहेंगे और जनहति की उसकी अपनी व्याख्या है।

अरवदि केजरीवाल की इस बात की तारीफभी करनी होगी और उन पर संदेह भी जताना होगा कि उन्होंने तमाम सवालों केजवाब न देते हु। या उनके चक्रव्यूह में न फंसते हु। अपनी जमीन और आसमान का □ कखाका खींचने की कोशशि की। वे भाजपा की तरफसे उठा□ ग□ हदिू राष्ट्रवाद या उग्र राष्ट्रवाद की बहस में नहीं उतरे, न ही उन्होंने फोर्ड फाउंडेशन जैसी संस्थाओं से वदिेशी चंदे ल□ जाने और फरि □ नजीओ से राजनीतकिदल में बदलने केसवाल को अहमयित दी। उन्होंने भ्रष्टाचार पर सामान्य बात की, लेकनि कांग्रेस केध□ाध□ उभरते और इस राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में कांग्रेसी शासन में हु। भ्रष्टाचार पर पहले जैसी सख्त बातें नहीं कीं। संभव है उन्होंने 'हार में उद्धत और जीत में वनिम्र' होने केपारंपरकिभारतीय सूत्र का पालन कयिा हो और इसीलि□ न तो भाजपा केराष्ट्रवाद का जवाब दयिा न ही कांग्रेस केभ्रष्टाचार पर आक्रामक हु□।

लेकिन इस खामोशी के बावजूद अरविंद केजरीवाल ने जो कहा वह □कदम ताजगी भरा राजनीतिक वक्तव्य था, उसमें देश का दिल छूने की क्षमता है□ केजरीवाल के भाषण के दो अंश थे, जिनमें □क तो दिल्ली के विकास के मॉडल पर चर्चा करने वाला और उसे अपनी प्रयोगशाला बनाने वाला था□ जिसमें बिजली कंपनियों का ऑडिट, मीटरों की जांच, झुग्गियों को नई जगह बसाने का वादा, दिल्ली के किसानों को सब्सिडी, दिल्ली को पूर्ण राज्य का दर्जा, लाल डोरा का विस्तार और शिक्षा स्वास्थ्य संबंधी कार्यक्रम शामिल है□

ये दिल्ली के स्थानीय मामले हैं और देश के अन्य राज्यों की स्थिति दिल्ली से अलग है इसलिए□ उनके इस मॉडल को उन पर हूबहू लागू नहीं किया जा सकता□ उनकी ये योजनाएं ज्यादा से ज्यादा महानगरों और उनके आसपास बसते शहरी क्षेत्रों पर लागू हो सकती हैं□ चूंकि यह उनकी जमीन है इसलिए□ उन्हें □क तरफ इस जमीन को बनाए□ रखना है लेकिन दूसरी तरफ अगर उन्हें पूरे देश के आसमान पर छा जाना है तो नई किस्म की जमीन भी तलाशनी होगी□

छोटा ही सही, लेकिन केजरीवाल के भाषण का □क अंश ज्यादा दार्शनिक और व्यापक महत्त्व का है और शायद देश के ज्यादातर लोगों की निगाह उसी पर थी□ वे उसी पर चर्चा करना चाहते हैं और उसी में नए□ भारत की तस्वीर देखना चाहते हैं□ केजरीवाल ने अपने भाषण में □क तरफ आम आदमी की व्याख्या की और दूसरी तरफ पूरे देश से वीआइपी संस्कृति खत्म करने की बात की□ इसी को उन्होंने स्वराज की संज्ञा दी है□

उनकी आम आदमी की व्याख्या से संभव है कि समाजवादी और वामपंथी विमर्श असहमत हो और सवाल खड़ा कर दे कि दिल्ली के ग्रेटर कैलाश और वसंत विहार में रहने वाला कैसे आम आदमी हो सकता है□ वह यह भी सवाल खड़ा कर सकता है कि बंगलुरु, गुड़गांव और नोएडा की बहुराष्ट्रीय कंपनियों में लाखों रुपए□ महीने की तनख्वाह पाने वाला प्रोफेशनल आम आदमी की परिभाषा में कैसे आ सकता है□

कहां □क तरफ झुग्गी में रहने वाला मजदूर और दूसरी तरफ खेतों में घाटा उठा कर काम करने वाला किसान और कहां लंबी गाड़ियों में चलने वाले लोग? निश्चित तौर पर उनकी आम आदमी की परिभाषा बेहद विडंबनापूर्ण लगती है अगर हम उसे शास्त्रीय किस्म की वर्गीय अवधारणा से देखें□ लेकिन अगर हम उसे केजरीवाल की सादगी और ईमानदारी की कसौटी पर कस कर देखें तो वह जहां वर्गीय सहयोग की अवधारणा है वहीं वह वर्गांतरण (यानी डिक्लास) होने की अवधारणा भी है□ आखिर जब कोई साधन-संपन्न और सत्ता-संपन्न व्यक्ति न लालबत्ती लगा कर चलेगा न ही सुरक्षा लेगा, न ही बड़े बंगले में रहेगा और भेदभाव से रहित होकर सबसे गरिमापूर्ण व्यवहार करेगा तो इससे □क प्रकार समतामूलक समाज की दिशा में देश बढ़ेगा ही□ वही समतामूलक समाज की अवधारणा, जिसे सामाजिक न्याय के तमाम प्रयासों और लोककल्याणकारी योजनाओं के बावजूद भारतीय राजनीति ने धूल-धूसरित कर दिया है□

यह वही राजनीति है जो कभी लोहिया, तो कभी जेपी तो कभी चरण सिंह का दामन पकड़ कर और परिवारवाद और जातिवाद और पूंजीवाद के खिलाफ खड़ा होने का दावा करते हुए□ सत्ता में आई□ लेकिन वह राजनीति जब सत्ता में आ गई तो □क तरफ सांप्रदायिकता का मुकाबला करने के लिए□ अतीक अहमद जैसे आपराधिक चरित्र के व्यक्ति को सांसद बनाने लगी, मुजफ्फरनगर में दंगा हो जाने देने के बाद भारी ठंड में लोगों को राहत शिविरों से भगाने लगी और दूसरी तरफ कभी सैफई तो कभी लखनऊ में जश्न मनाने लगी□

सवाल उठता है कि जब आप अपने समाज में क्रूरता फैलाने, किसी को दबाने-कुचलने और संसाधनों की लूट करने की राजनीति करेंगे ही नहीं तो आप को किससे सुरक्षा की जरूरत होगी□ या, आप को किससे खतरा होगा? आप को क्यों चाहिए□ जेड प्लस और दूसरी तरह की सुरक्षा के कमांडो□ आप को वीआइपी सुरक्षा के लिए□ क्यों दलाली खाकर खरीदे गए□ हेलिकॉप्टर चाहिए□, अगर आप अपने देशवासियों से प्रेम करते हैं और उनके दिलों में आप ने नफरत के बजाय प्रेम और समता का भाव भरा है□

संभवत: वीआइपी सुरक्षा उसी को चाहि जिसने कहीं दंगा कराकर समाज के किसी तबके को अपना शत्रु बना लिया है, कहीं संसाधनों को लूट कर आम जनता को कंगाल किया है या अपने प्रतिद्वंद्वी को लोकतांत्रिक तरीके से हराने के बजाय धनबल और बाहुबल से परास्त किया है।

इस मामले में हमें केजरीवाल के साहस की प्रशंसा करनी चाहि कि उन्होंने अपनी सुरक्षा ईश्वर के हवाले छो दी है। महात्मा गांधी की तरह दिखाया जाने वाला यह राजनीतिक साहस अपने आप में ि कन और श्रेष्ठ समाज की दिशा में उठाया जाने वाला ि कब। क्दम है। विडंबना देखि कि इस तरह का साहस न तो वह कांग्रेस पार्टी दिखा पा रही है जिसके सबसे ब नेता महात्मा गांधी थे और न ही वह भारतीय जनता पार्टी, जिसने राम का नाम लेकर पूरे देश में आग लगी दी लेकिन उसके किसी नेता ने कभी यह नहीं कहा कि हमें राम पर भरोसा है और कोई सुरक्षा नहीं चाहि।

भाजपा के प्रधानमंत्री पद के उम्मीदवार नरेंद्र मोदी की सुरक्षा को ि कराष्ट्रीय विषय बनाने का कोई मौका भाजपा हाथ से जाने नहीं देना चाहती। वे भी अपने भयभीत व्यक्तित्व से न सिर्फ दूसरे क्षेत्रों की सुरक्षा के खतरे में डालते हैं बल्कि सुरक्षा का मजबूत घेरा ख। कर लंबे और तथ्यहीन भाषणों से अदम्य राजनीतिक साहस दिखाने की कोशिश करते हैं।

जातिवादी, भ्रष्ट और सांप्रदायिक राजनीति करने वाले दलों ने पिछले तीस सालों में वीआइपी सुरक्षा घेरों के ल न तरह का राजनीतिक और आर्थिक विमर्श सृजित किया है। उनका उपभोक्तावाद, उनकी तानाशाही, उनका आपराधिक चरित्र और उनका परिवारवाद इसी वीआइपी संस्कृति में सुरक्षित महसूस करता है और इसीलि जब अरविंद केजरीवाल उसे खत्म करने की बात करते हैं तो न सिर्फ वे कांपने लगते हैं बल्कि उन्हें अराजकता का खतरा दिखाई प ता है। सचमुच इस भय और आडंबर से बाहर निकलने की जरूरत है और अगर इस दिशा में प्रयास को स्वराज का नाम दिया जा रहा है तो अनुचित नहीं है।

लेकिन दिल्ली में सरकार बनाने के बाद पूरे देश में अपनी बात मनवाना और अपने आदर्शों के अनुरूप इस तरह जीना कि देश उस पर चले, आसान नहीं है। यह काम सांप्रदायिकता, भ्रष्टाचार और लूट पर टिकी राजनीति के सवालों पर न तो बहुत बहस करने से बनेगा न ही चुप्पी साधने से। विकल्प का निर्माण वाणी और कर्म के समन्वय से करना होगा। आम आदमी पार्टी ने अभी भ्रष्ट, सांप्रदायिक और जातिवादी हो चुकी राजनीति के चक्रव्यूह का पहला द्वार तो। है। उसे अभी कई द्वार तो ने हैं।

□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□- https://www.facebook.com/Jansatta
□□□□□□ □□□ □□ □□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□-□ □□https://twitter.com/Jansatta